परमात्म ऊर्जा

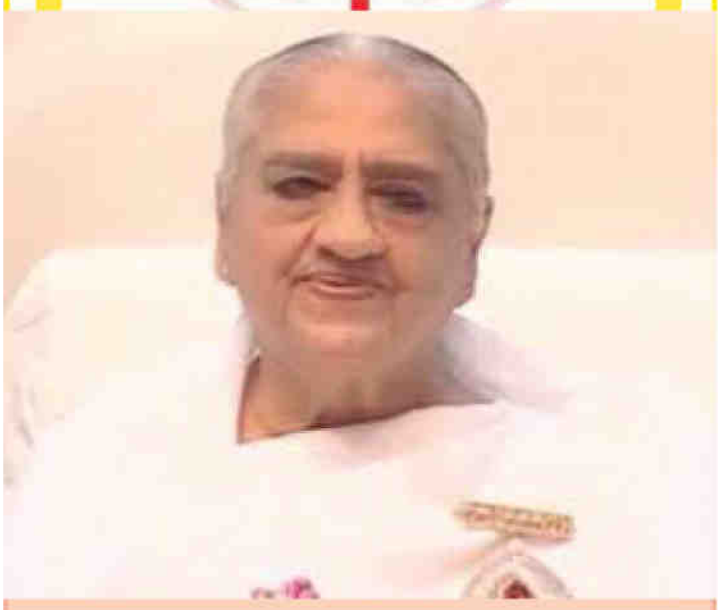

अव्यक्त में सर्विस कैसे होती है,यह अनुभव होता है? अव्यक्त में सर्विस का साथ कैसे सदैव रहता है, यह भी अनुभव होता है? जो वायदा किया है कि स्नेही आत्माओं के हर सेकंड साथ ही हैं, ऐसे सदैव साथ का अनुभव होता है? सिर्फ रूप बदला है लेकिन कर्त्तव्य वही चल रहा है। जो भी स्नेही बच्चे हैं उन्हों के ऊपर छत्र रूप में नज़र आता है। छत्रछाया के नीचे सभी कार्य चल रहा है, ऐसी भासना आती है। व्यक्त से अव्यक्त, अव्यक्त से व्यक्त में आना यह सीढ़ी उतरना और चढ़ना जैसे आदत बन गयी है। अभी-अभी वहाँ, अभी-अभी यहाँ, तो जिसकी ऐसी स्थिति हो जाती है, आभास हो जाता है उसको यह व्यक्त देश भी जैसे अव्यक्त भासता है। स्मृति और दृष्टि बदल जाती है। सभी एवररेडी बनकर बैठे हुए हो? कोई भी देह के हिसाब-किताब से भी हल्का? वतन में शुरु-शुरु में पक्षियों का खेल दिखलाते थे, पक्षियों को उड़ाते थे। वैसे यह आत्मा भी पक्षी है। जब चाहे तब उड़ सकती है। वह तब हो सकता है जब आभास हो। जब खुद उड़ता पक्षी बनें तब औरों को भी एक सेकंड में उड़ा सकते हैं।

अभी ज़्यादा समय अपने को फरिश्ते ही समझो। फरिश्तों की दुनिया में रहने से बहुत ही हल्कापन अनुभव होगा जैसे कि सूक्ष्मवतन को ही स्थूलवतन में बसा दिया है। स्थूल और सूक्ष्म में अंतर नहीं रहेगा। तब सम्पूर्ण स्थिति में भी अंतर नहीं रहेगा। यह व्यक्त देश जैसे अव्यक्त देश बन जायेगा। सम्पूर्णता के समीप आ जायेंगे। जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी हैं तो भी अव्यक्त रूप के, अव्यक्त देश के, अव्यक्त प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को अनुभव कराने लिए आते हैं।

ऐसे आप सभी भी अपने अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ। जब अव्यक्त स्थिति की स्टेज सम्पूर्ण होगी तब ही अपने राज्य में साथ चलना होगा। एक आँख में अव्यक्त सम्पूर्ण स्थिति, दूसरी आँख में राज्य पद। ऐसे ही स्पष्ट देखने में आएंगे जैसे साकार रूप में दिखाई पड़ता है। बचपन रूप भी और सम्पूर्ण रूप भी। बस यह बनकर फिर यह बनेंगे। यह स्मृति रहती है। भविष्य की रूपरेखा भी जैसे सम्पूर्ण देखने में आती है।

जितना-जितना फरिश्ते लाइफ के नज़दीक होंगे उतना-उतना राजपद को भी सामने देखेंगे। आजकल कई ऐसे होते हैं जिनको अपने पास्ट की पूरी स्मृति रहती है। तो यह भविष्य भी ऐसे ही स्मृति में रहे यह बनना है। वह भविष्य के संस्कार इमर्ज होते रहेंगे। मर्ज नहीं, इमर्ज होंगे।

कथा सरिता

आत्म सम्मान

एक भिखारी किसी स्टेशन पर पेंसिलों से भरा कटोरा लेकर बैठा हुआ था। एक युवा व्यवसायी उधर से गुज़रा और उसने कटोरे में 50 रूपये डाल दिये, लेकिन उसने कोई पेंसिल नहीं ली। उसके बाद वह ट्रेन में बैठ गया। डिब्बे का दरवाजा बंद होने ही वाला था कि वो युवा एकाएक ट्रेन से उतर कर भिखारी के पास लौटा और कुछ पेंसिल उठा कर बोला, "मैं कुछ पेंसिल लूँगा। इन पेंसिलों की कीमत है, आखिरकार तुम एक व्यापारी हो और मैं भी।" उसके बाद वह युवा तेजी से ट्रेन में चढ़ गया।

कुछ वर्षों बाद, वह व्यवसायी एक पार्टी में गया। वह भिखारी भी वहाँ मौजूद था। भिखारी ने उस व्यवसायी को देखते ही पहचान लिया, वह उसके पास जाकर बोला, "आप शायद मुझे नहीं पहचान रहे हैं, लेकिन मैं आपको पहचानता हूँ।"

उसके बाद उसने उसके साथ घटी उस घटना का जिक्र किया। व्यवसायी ने कहा, "तुम्हारे याद दिलाने पर मुझे याद आ रहा है कि तुम भीख मांग रहे थे। लेकिन तुम यहां सूट और टाई में क्या कर रहे हो?"

भिखारी ने जवाब दिया, "आपको शायद मालूम नहीं है कि आपने मेरे लिए उस दिन क्या किया। मुझ पर दया करने की बजाय मेरे साथ सम्मान के साथ पेश आये। आपने कटोरे से पेंसिल उठाकर कहा, "इनकी कीमत है, आखिरकार तुम भी एक व्यापारी हो और मैं भी।"

आपके जाने के बाद मैंने बहुत सोचा, मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ? मैं भीख क्यों मांग रहा हूँ? मैंने अपनी ज़िंदगी को संवारने के लिए कुछ अच्छा काम करने का फैसला किया। मैंने अपना थैला उठाया और घूम-घूम कर पेंसिल बेचने लगा। फिर धीरे-धीरे मेरा व्यापार बढ़ता गया, मैं कॉपी-किताब एवं अन्य चीज़ें भी बेचने लगा और आज पूरे शहर में मैं इन चीज़ों का सबसे बड़ा थोक विक्रेता हूँ। मुझे मेरा सम्मान लौटाने के लिए मैं आपका तहदिल से धन्यवाद देता हूँ क्योंकि उस घटना ने आज मेरा जीवन ही बदल दिया।

याद रखें कि आत्म सम्मान की वजह से ही हमारे अंदर प्रेरणा पैदा होती है या कहें तो हम आत्मप्रेरित होते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने बारे में एक श्रेष्ठ राय बनाएं और आत्मसम्मान से पूर्ण जीवन जीएं।

एक ख्वाइश ऐसी भी

वह प्राइमरी स्कूल की टीचर थी। सुबह उसने बच्चों का टेस्ट लिया था और उनकी कॉपियां जांचने के लिए घर ले आई थी। बच्चों की कॉपियां देखते-देखते उसके आँसू बहने लगे। उसका पति वहीं लेटे टीवी देख रहा था। उसने रोने का कारण पूछा।

टीचर बोली, "सुबह मैंने बच्चों को 'मेरी सबसे बड़ी ख्वाइश' विषय पर कुछ पंक्तियां लिखने को कहा था, एक बच्चे ने इच्छा जाहिर की है कि भगवान उसे टेलिविजन बना दे। यह सुनकर पतिदेव हँसने लगे।

टीचर बोली, "आगे तो सुनो बच्चे ने लिखा है यदि मैं टीवी बन जाऊंगा, तो घर में मेरी एक खास जगह होगी और सारा परिवार मेरे इर्द-गिर्द रहेगा। जब मैं बोलूँगा, तो सारे लोग मुझे ध्यान से सुनेंगे। मुझे रोका-टोका नहीं जायेगा और न ही उल्टे सवाल होंगे। जब मैं टीवी बनूंगा, तो पापा ऑफिस से आने के बाद थके होने के बावजूद मेरे साथ बैठेंगे। मम्मी को जब तनाव होगा, तो वे मुझे डांटेंगी नहीं, बल्कि मेरे साथ रहना चाहेंगी। मेरे बड़े भाई-बहनों के बीच मेरे पास रहने के लिए झगड़ा होगा। यहाँ तक कि जब टीवी बंद रहेगा, तब भी उसकी अच्छी तरह देखभाल होगी। और हाँ, टीवी के रूप में मैं सबको खुशी भी दे सकूँगा।"

यह सब सुनने के बाद पति भी थोड़ा गंभीर होते हुए बोला, 'हे भगवान! बेचारा बच्चा... उसके माँ-बाप तो उस पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते!"

टीचर पत्नी ने आँसू भरी आँखों से उसकी तरफ देखा और बोली, "जानते हो, यह बच्चा कौन है? हमारा अपना बच्चा, हमारा छोटू।"

सोचिये, यह छोटू कहीं आपका बच्चा तो नहीं!

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में हमें वैसे ही एक-दूसरे के लिए कम वक्त मिलता है, और अगर हम वो भी सिर्फ टीवी देखने, मोबाइल पर गेम खेलने और फेसबुक से चिपके रहने से गँवा देंगे तो हम कभी अपने रिश्तों की अहमियत और उससे मिलने वाले प्यार को नहीं समझ पायेंगे।

राजकोट-रविरत्नापार्क(गुज.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 51 किलो घी के 'श्री महाकालेश्वर एवं द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन' झाँकी के उद्घाटन अवसर पर शिव ध्वजारोहण, केक कटिंग, दीप प्रज्वलन व महाआरती करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी,क्षेत्रीय निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़, बी.के. झाला साहेब,डिप्टी एस.पी., भुज डिस्ट्रिक्ट, अजय सिंह जाडेजा,डिप्टी एंटी करप्शन ब्यूरो,राजकोट, उद्योगपति अमुभाई,रविटेक्नो फोर्स, ऐरवादिया साहेब,पूर्व जिला शिक्षण अधिकारी, राजकोट, ब्र.कु. नलिनी बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. अंजु बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग।

जम्मू-कटरा(जम्मू-कश्मीर)। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर महा शिव जयंती महोत्सव एवं शिव ध्वजारोहण कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे मुख्य अतिथि श्री महाराज योग नंद,योग आश्रम कटरा, विशिष्ट अतिथि संजीव शर्मा,राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता, राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी,प्रभारी,ब्रह्माकुमारीज़ जम्मू-कश्मीर/लद्दाख यूटी एवं नॉर्दन ज़ोन कोऑर्डिनेटर स्पोर्ट्स विंग,ब्रह्माकुमारीज़, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. रविंदर भाई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रजनी बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

धमतरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित छः दिवसीय शिव दर्शन आध्यात्मिक मेले के पांचवे दिन 'मानवता के संरक्षक' विषय पर समाज सेवियों के लिए आयोजित सम्मेलन में ब्र.कु. सरिता दीदी को उनके आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में योगदान के लिए अग्रवाल समाज, सिंधी समाज व लायंस क्लब द्वारा सम्मानित किया गया। इस मौके पर रो. मनसुख अग्रवाल,अध्यक्ष,रोट्री क्लब, अग्रवाल समाज, लायन अजय पारेख,पूर्व अध्यक्ष,लायंस क्लब धमतरी फ्रेंड्स, हरमिंदर छाबड़ा,अध्यक्ष,सिख समाज, महेश रोहरा, अध्यक्ष,सिंधी समाज, मनोज सोनी,अध्यक्ष,सोनी समाज, महेश कुमार सोनी,सराफा व्यापारी संघ, संजय संकलेचा,जैन समाज, टोपेश्वर देवांगन,देवांगन समाज, यशवंत साहू, अजित साहू,साहू समाज, अशोक पटेल,पटेल समाज, रोहताश मिश्रा,ब्राह्मण समाज, दिलीप मेहता, सचिव, गुजराती समाज, देऊराम शांडिल्य,सेन समाज, संजुराव आड़े पवार, अध्यक्ष,पद्मशाली समाज, बहन कामिनी कौशिक तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।